Call to Education
Dug Dugi
शिक्षा के लिए आह्वान

डुग डुगी

पेज-8 (कवर सहित)
मार्च 2022
बच्चों, शिक्षकों और अभिभावकों का मंच
निशुल्क ऑनलाइन वितरण

तान्या पांडेय, कक्षा 9, जवाहर नवोदय विद्यालय जनपद बलरामपुर, उत्तर प्रदेश

डुगडुगी पत्रिका को कैमरे या मोबाइल फोन से फोटो क्लिक करके भेज सकते हैं। ये फोटो आपके शहर, गांव के हो सकते हैं। आप अपने भ्रमण के फोटो भी डुगडुगी को भेज सकते हैं। फोटो के साथ कैप्शन भी भेजिएगा। फोटो क्लिक करने वाले का नाम, पता, क्लास, स्कूल जरूर लिखिएगा।

डुग डुगी
किस्से, कहानियों के मंच तकधिनाधिन की प्रस्तुति

खाद्य सुरक्षा और पोषण की खेती है

”बारहनाजा का मतलब है 12 तरह के अनाज। यह मिश्रित खेती का सिद्धांत है, जिसमें केवल अनाज ही नहीं, बल्कि दलहन, तिलहन, शाक भाजी, रेशे वाले पदार्थों के साथ पशुओं के लिए चारा भी शामिल है। इसमें मनुष्यों के साथ पशुओं के लिए भी भोजन की व्यवस्था है। बारहनाजा में सिर्फ 12 फसलें ही शामिल हों, ऐसा भी नहीं है. इसमें अलग-अलग क्षेत्रों में लगभग 20 तरह के खाद्य पदार्थ शामिल हैं। पर, एक खेत में 20 तरह की फसलें उगाई जाती हों, यह भी संभव नहीं है। अलग-अलग इलाकों में, वहां की भौगोलिक परिस्थितियों और खानपान की संस्कृति के अनुसार कहीं दस-बारह, तो कहीं इससे कम प्रजातियां उगाना बारहनाजा का प्रतीक है। बारहनाजा को समझने के लिए फसल चक्र को समझना होगा।”

बीज बचाओ आंदोलन के प्रणेता विजय जड़धारी हमें बारहनाजा के बारे में बता रहे थे। उनका कहना है, बारहनाजा की समृद्ध खेती को परंपरा के नाम पर नहीं, बल्कि इसको खाद्य सुरक्षा, खाद्य सम्प्रभुता,पोषण, पशुपालन, पर्यावरण संरक्षण के लिए आगे बढ़ाना है। उन्होंने अपनी किताब बारहनाजा में पोषण एवं खाद्य सुरक्षा की खेती पर विस्तार से बात की है। प्रस्तुत है उनकी पुस्तक के कुछ अंश-

खरीफ के महत्वपूर्ण फसल चक्र के अंतर्गत बारहनाजा मनुष्य की खाद्य सुरक्षा और पोषण के लिए उपयोगी होने के साथ ही, खेती और पशुपालन के संबंध को भी मजबूत करती है। उनका मानना है, एकल फसलें पोषण के साथ-साथ धरती का अत्यधिक शोषण करती हैं। बारहनाजा में शामिल कई खाद्य प्रजातियां धरती को पोषण वापस करती हैं। ये फसलें मिल जुलकर अपना फसल समाज भी बनाती हैं। पारिस्थितिकीय संतुलन को मजबूत बनाने वाली यह पद्धति वैज्ञानिक कृषि से कहीं कम नहीं हैं।

बारहनाजा खेती की आवश्यकता पर जोर देते हुए जड़धारी जी कहते हैं, ऐसी फसलों का ज्यादा विस्तार होना चाहिए, जो कुदरती तौर पर खनिज, लवण, प्रोटीन, कार्बोहाइड्रेट, विटामिन एवं ऊर्जा देती हैं और रोगों से बचाती हैं। लेकिन हरितक्रांति आने के बाद स्वावलंबी जीवनधारा टूटने लगी। वैज्ञानिकों ने उपज बढ़ाने पर जोर दिया, उपज बढ़ी भी, लेकिन यह क्रांति एकल प्रजातियों पर केंद्रित हो गई। बाहर का बीज, रासायनिक खादें, कीटनाशक, खरपतवार नाशक जहरों पर किसान आश्रित हो गए और सदियों से चली आ रही बारहनाजा कृषि पद्धति की जगह एकल सोयाबीन लगाने पर जोर दिया गया। लेकिन उत्तराखंड के अनुभवी किसानों ने एकल प्रजातियों के दुष्प्रभाव से सीख लेकर बारहनाजा की विविधता की तरफ लौटने के प्रयास तेज किए।

मंडुआ है बारहनाजा परिवार का मुखिया

जड़धारी जी बताते हैं, बारहनाजा परिवार का मुखिया मंडुआ है, जिसे कोदा भी कहते हैं। दूसरा नंबर मारसा यानी रामदाना का आता है। बारहनाजा परिवार में 1. मंडुआ या कोदा, 2. मारसा या रामदाना, 3. ओगल (कुट्टू), 4. जोन्याला यानी ज्वार, 5. मक्का, 6. राजमा, 7. गहथ यानी कुलथ, 8. भट्ट यानी पारंपरिक सोयाबीन, 9. रैंयास यानी नौरंगी, 10. उड़द, 11. सुंटा यानी लोबिया, 12. रगड़वांस, 13. गुरुंश, 14. तोर, 15.मूंग, 16. भंगजीर, 17. तिल, 18.जख्या, 19. भांग, 20, सण यानी सन, 21. काखड़ी यानी खीरा शामिल हैं।

- बारहनाजा के बारे में विस्तार से जानकारी के लिए पढ़ें- विजय जड़धारी की पुस्तक बारहनाजा- पारंपरिक खेती का विज्ञान, जिसको एकेडमी ऑफ डेवलपमेंट साइंस ने प्रकाशित किया है।

फूलदेई पर्व पर बच्चों की रचनात्मकता कमाल की थी

राजकीय प्राथमिक विद्यालय बजेला, ब्लॉक- धौलादेवी, जिला अल्मोड़ा में बाल लोक पर्व फूलदेई हर्षोल्लास से मनाया गया। बच्चों ने अध्यापक भास्कर जोशी के साथ परिवेश में उगने वाले औषधीय फूल और पौधों के हरबेरियम का निर्माण किया। बच्चों को पारंपरिक ज्ञान के बारे में बताने के लिए बॉटनिकल सर्वे ऑफ इंडिया में कार्यरत वैज्ञानिक संजय सिंह ने मदद की। बच्चों ने चित्रकारी प्रतियोगिता में भाग लिया और विभिन्न सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किए। प्रकृति संरक्षण और प्रकृति की उपयोगिता बताता यह बाल पर्व अनूठा है, जहाँ बड़े बच्चों से आशीर्वाद प्राप्त करते हैं।

शिक्षा में यह मौका बाल रचनात्मकता को बढ़ाने का है। इसी उद्देश्य से बच्चों ने जैविक पदार्थों जैसे पुराने अखबार ,कागज , गत्ते से बहुत सुंदर फूलों की टोकरियां बनाईं और उन्हें सजाया। बच्चों ने अपनी अपनी टोकरियों में विभिन्न प्रकार के फूल जैसे बुराँश, प्योली , आड़ू ,मेहल, बासिंग आदि से सजाईं। अभिभावकों ने भी प्रकृति संरक्षण के लिए वचन लिया और बच्चों द्वारा फूलदेई पर बनाई दीवारपत्रिका का अवलोकन किया ।

कहानी

शिकारी का हृदय परिवर्तन

कुमारी दीपिका राजपूत, कक्षा-7, एकीकृत शासकीय माध्यमिक शाला-केवलारी खेड़ा, विकास खंड-केवलारी, जिला-सिवनी (मध्यप्रदेश)

एक गाँव था, जिसका नाम नरसिंहपुर था। उस गाँव का वातावरण बहुत अच्छा था। वह गाँव बहुत ही सुन्दर था। उस गाँव में रमेश नाम का एक लड़का रहता था, जो पढ़ने-लिखने में बहुत अच्छा था और उसे प्रकृति से बहुत लगाव था। वह हर दिन सुबह उठकर पेड़-पौधों को पानी देता और पशु-पक्षियों को भी दाना-पानी देता था। रमेश के कोई भाई-बहन नहीं थे। सभी लोग उसे बहुत प्यार करते थे। इसी तरह दिन गुजरते गए।

एक दिन रमेश मैदान में खेल रहा था, तभी कहीं से गोली चलने की आवाज आती है । कुछ देर में एक पक्षी नीचे की ओर आ गिरा। रमेश डर गया और सोचने लगा, इस नन्हीं जान को किसने मारा होगा ? तभी वहां एक शिकारी पहुंचा और रमेश से बोला कि वह पक्षी उसका है वो उसे वापस कर दे। तब रमेश बोला कि नहीं करता, आपको नहीं पता पशु-पक्षी प्रकृति ने बनाए हैं। शिकारी यह सुनकर जोर-जोर से हंसने लगा और बोला नन्हीं सी जान में बड़ी बातें अच्छी नहीं लगती। चुपचाप मेरा शिकार मुझे वापस कर। रमेश ने शिकारी से कहा- आपको नहीं पता मारने वाले से बड़ा बचाने वाला होता है। ऐसा सुनते ही शिकारी कुछ न कह सका और बेरंग ही लौट गया।

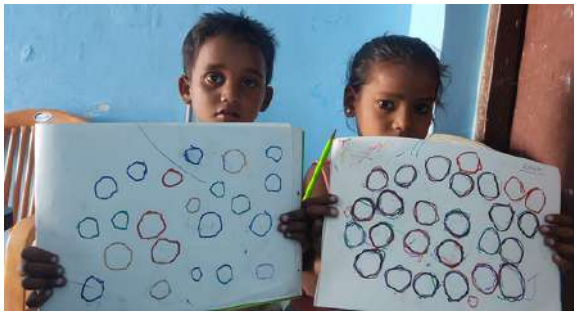

यश और सोनम, डुगडुगी पाठशाला, डोईवाला, देहरादून (उत्तराखंड)

डुगडुगी पाठशाला, डोईवाला में पढ़ने वाले बच्चे।

आओ क्लिक करें

1.वन गुर्जरो के सालाना पलायन के लिए तैयार घोड़ा (प्रतीकात्मक रूप से तैयार किया)। इसके माध्यम से बताया गया कि पलायन के समय क्या जरूरी सामान लेकर सफर करते हैं। 2. वन गुर्जर युवा संगठन के उत्सव में गुर्जर समाज के पारम्परिक परिधान में एक बालिका । 3. हरिद्वार के रहने वाले 65 साल के वन गुर्जर युसूफ लोदा ने एक हाथ से उठा लिया 50 किलो का वजन। 4. मार्च की तपती दोपहरी में गन्ने की बसंतकालीन बुआई चल रही है। देहरादून के बुल्लावाला के एक खेत में गन्ना बुआई करती महिला। 5. खेत में बुआई के लिए गन्ने के बीज ले जाते हुए नारायण सिंह। 6. बुआई करते हुए क्यारियों में इस तरह डाला जाता गन्ना।

Creativity Corner

दिनेश राजपूत कक्षा-7, एकीकृत शासकीय माध्यमिक विद्यालय केवलारी खेड़ा, ब्लाक-केवलारी, जिला-सिवनी (म.प्र.)

Made by Anchal Dhiman, Class 11th, Cecil Convent,School, Ambala- Haryana

लैंप क्राफ्टः इलमा,अंजली,अक्सा व आलिया,कक्षा- 4

खुशी, कक्षा-6

फूलदेईः राजकीय प्राथमिक विद्यालय, कोदिमा, संकुल नगरसू, अगस्त्यमुनि, जिला- रुद्रप्रयाग, उत्तराखंड

लवकुश चौहान,कक्षा 5, प्राथमिक विद्यालय पटखौली, गोंडा (यूपी)

Abhishek, Class 5th, P.S. Civil Line, Dabrai, Firozabad (U.P.)

सुधा पुरी, कक्षा 3, प्राथमिक विद्यालय हृदयनगर, जिला- बलरामपुर (उत्तर प्रदेश)

रुखसार कक्षा 3, प्राथमिक विद्यालय पटखौली, छपिया - गोंडा (उत्तर प्रदेश)

राजकीय प्राथमिक विद्यालय,आदर्श इंदिरा बंगाली कॉलोनी रुद्रप्रुर में फूलदेई त्योहार धूमधाम से मनाया गया।

Made by Anchal Dhiman, Class 11th, Cecil Convent,School, Ambala- Haryana

हलासनः शिवम कक्षा 3 प्राथमिक विद्यालय हृदयनगर बलरामपुर, उत्तर प्रदेश

करिश्मा, कक्षा 5, प्राथमिक विद्यालय पटखौली, छपिया.गोंडा

अर्द्ध चक्रासनः शुभम कक्षा 3 प्राथमिक विद्यालय हृदयनगर बलरामपुर उत्तर प्रदेश

Deeksha,Class- 4, G.P.S. Gadi, Block- Dasholi, Chamoli Uttarakhand

अंशिका कक्षा 1, प्राथमिक विद्यालय हृदयनगर, जिला-बलरामपुर

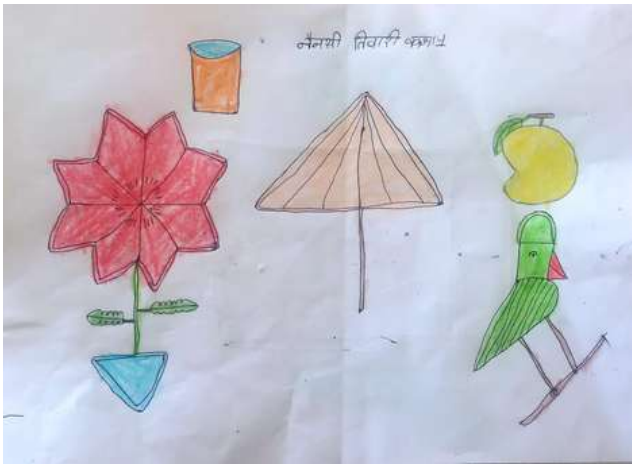

नैंसी तिवारी, कक्षा 1, प्राथमिक विद्यालय, हृदयनगर, जिला-बलरामपुर, उत्तर प्रदेश

वंशिका कुमारी, कक्षा 6, राजकीय उच्चतर प्राथमिक विद्यालय, अकौढा खुर्द, हरिद्वार (उत्तराखंड)

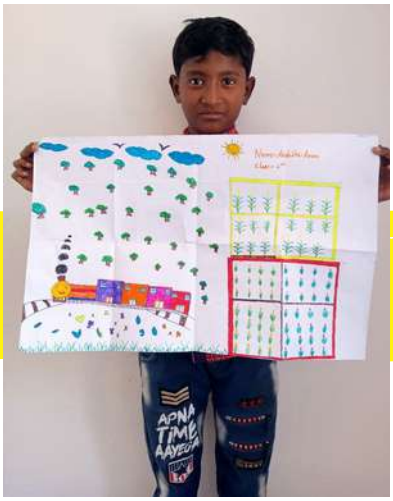

अंशिका आर्मो , कक्षा 6, एकीकृत शासकीय माध्यमिक विद्यालय- केवलारी खेड़ा, ब्लाक- केवलारी, जिला-सिवनी (मध्य प्रदेश)

मेरा गाँव- केवलारी खेड़ा

मेरा गाँव पहाड़ी इलाके में बसा हुआ है। मेरा गाँव बहुत सुंदर है। मेरे गाँव में एक कुआं है, जिससे पीने का पानी आता है। कुआं के किनारे आम का पेड़ है. जो बहुत खट्टा है। हमारे गाँव के आसपास जंगल है।

हमारे गाँव के घाट के नीचे खेत है। हमारे गाँव के थोड़ी दूरी पर नदी है। हमारे गाँव के बहुत से खेतों में कुएं खोदे गये हैं। हमारे गाँव में अधिकांश आर्मो (आदिवासी) परिवार रहते हैं। हमारे गाँव से कहीं जाने के लिए घाटी से उतरना पड़ता है। हमारे गाँव के कुआं से पानी नहीं आता तो हम पैदल जाकर दूसरे कुआं से पानी लाते हैं और खट्टे-खट्टे आम खाते हैं।

प्रमिला आर्मो, कक्षा-सातवीं, एकीकृत शासकीय माध्यमिक शाला-केवलारी खेड़ा, विकास खंड-केवलारी, जिला-सिवनी (मध्यप्रदेश)

काजल, कक्षा 4, राजकीय प्राथमिक स्कूल गड़ी दशोली ब्लाक, जिला- चमोली. उत्तराखंड

अनार के दाने

छोटा सा पौधा लगाएंगे
अनार का पेड़ उगाएंगे ।

ठंडा ठंडा पानी देंगे
हरा-भरा उसको कर देंगे।

बड़ा जब वह हो जाएगा
फल हरियाली से छाएगा।

मोती जैसे दाने होंगे
मीठे मीठे रसीले होंगे।

हम जब जूस बनाएंगे
जल्दी गट कर जाएंगे।

मरीज को इसे पिलाएंगे
बीमारी से मुक्त कराएंगे।

स्वरचित-
अंशिका चढ़ार कक्षा सातवीं
शासकीय माध्यमिक शाला जेरवारा
विकासखंड राहतगढ़ जिला सागर

मेरे घर का व्यवसाय

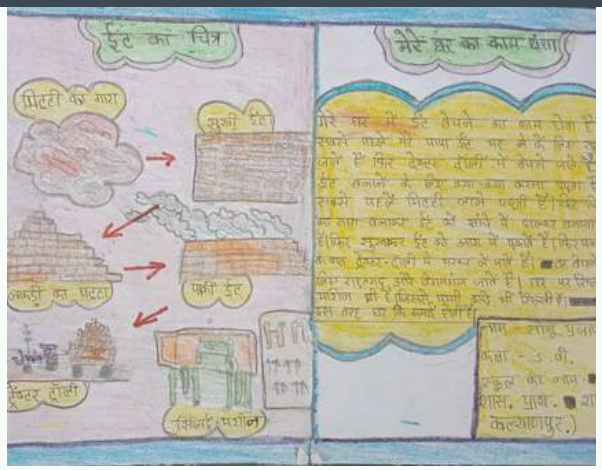

मेरे घर में ईंट बेचने का काम होता है। सबसे पहले मेरे पापा ईंट खरीदने के लिए खुरई जाते हैं, जो हमारे गांव से 30 किलोमीटर दूर है। ट्राली में ईंट भरकर राहतगढ़ और बेगमगंज ले जाकर बेचते हैं । ईंट बनाने के लिए क्या-क्या करना पड़ता है?

सबसे पहले मिट्टी लानी पड़ती है, फिर मिट्टी का गारा बनाकर सांचे में डालकर ईंट बनाई जाती है। ईंटों को सुखाकर लकड़ी का भट्टा बनाकर उस में रखकर आग लगाकर ईंटों को पकाया जाता है। इस तरह ईंट पक कर तैयार हो जाती है । पापा इन ईंटों को खरीदकर ट्रैक्टर ट्राली में भरकर राहतगढ़ और बेगमगंज में बेचते हैं। मेरे घर पर सिलाई मशीन भी है ,जिसे मम्मी चलाती हैं। इस तरह हमारे घर की आय होती है।

सोनू प्रजापति, कक्षा- 5वीं,शासकीय प्राथमिक शाला, कल्याणपुर (सागर), प्रभारी शिक्षिका श्रीमती वीणा देवी राय
शिक्षक श्री रामेश्वर लोधी

पहेलियां

1. रोज सुबह से मुझे तोड़ कर
   अपने दांत साफ करते हैं लोग
   हो जाती जब खाज खुजली
   मुझसे दवा बनाते हैं लोग
   उत्तम - नीम
2. जड़ रहती मेरी लंबी लंबी
   छाया देता ठंडी ठंडी
   गांव गांव में रहता हूं
   राष्ट्रीय वृक्ष कहलाता हूं
   उत्तर - बरगद

स्वरचित- हरवंश अहिरवार कक्षा सातवीं
शासकीय माध्यमिक शाला जेरवारा विकासखंड राहतगढ़ जिला सागर

मोटा कद्दू

पीले रंग का होता कद्दू,
मोटा - मोटा होता कद्दू।
बहुत ही भारी होता कद्दू,
व्रत में, सब्जी में खाते कद्दू।
पतली से पतली,बेल पर कैसे
लटकता रहता कद्दू ?
कभी बेल, घर पर चढ़ जाए,
खपरैल पर बैठा दिखता कद्दू ।
मीठा - मीठा होता कद्दू,
तभी तो सबको भाता कद्दू।

स्वरचित- हरि ओम चढ़ार कक्षा सातवीं
शासकीय माध्यमिक शाला जेरवारा विकासखंड राहतगढ़. जिला सागर

"भूरी बाई"की भीली आर्ट से प्रेरित होकर,एकलव्य प्रकाशन की किताब "सो जा उल्लू" के चित्र अपनी कक्षा में बनाए। इसके लिए गेरू, गोबर, चूना, नील आदि का प्रयोग किया। यह पुस्तकालय की सजीवता और बच्चों के जुड़ाव का परिणाम है।- जय शेखर, प्राथमिक विद्यालय धुसाह,जिला- बलरामपुर (उत्तर प्रदेश)

क्रांति लोधी, कक्षा 6 शासकीय माध्यमिक शाला जेरवारा, ब्लॉक राहतगढ़, जिला सागर (मध्य प्रदेश)

सौरभ शर्मा,प्रधानाध्यापक
कायमगंज, फर्रुखाबाद
उत्तर प्रदेश

शिक्षक भाष्कर जोशी के गुणवत्तापूर्ण शिक्षा के लिए नवाचार को सराहना

एससीईआरटी देहरादून ने चार मार्च 2022 को अजीम प्रेमजी फाउंडेशन के सहयोग से 'प्राथमिक स्तर पर अंग्रेजी के अभिनव अभ्यास' पर दूसरी राज्य स्तरीय संगोष्ठी आयोजित की। उत्तराखंड के हर जिले के 13 वक्ताओं ने अंग्रेजी शिक्षण प्रक्रियाओं के विविध प्रयोगों पर अपने पेपर प्रस्तुत किए।

कहानी सुनाना, प्रारंभिक कक्षाओं में पढ़ना, आकस्मिक पठन, कक्षा में प्रौद्योगिकी का उपयोग करना, अंग्रेजी पढ़ाने के लिए ब्लेंडेड रोल प्ले, टीएलएम का प्रभावी उपयोग और बहुत कुछ। इस कार्यक्रम के पैनलिस्टों में प्रो. चेतना पोखरियाल, एसोसिएट प्रोफेसर, दून यूनिवर्सिटी और प्रो. पुनीत सैनी, एसोसिएट प्रोफेसर एमकेपी, देहरादून शामिल थे।

पिछले साल के सेमिनार पेपर के संकलन के अनावरण के बाद निदेशक शिक्षा (प्राथमिक) श्रीमती वंदना गर्व्याल ने इस कार्यक्रम का शुभारंभ किया। पैनलिस्टों के फीडबैक और इनपुट उत्साहजनक और मार्गदर्शक थे। अनुसंधान लेखन तंत्र की आवश्यकता पर चर्चा की गई । राजकीय प्राथमिक विद्यालय बजेला ब्लाक धौलादेवी जिला अल्मोड़ा में सहायक अध्यापक भास्कर जोशी बहुत लंबे समय से नवाचार में गुणवत्तापूर्ण शिक्षा को लेकर कार्य कर रहे हैं। इसी संदर्भ में उन्होंने अपना पेपर - ब्लेंडेड रोल प्ले पर प्रस्तुत किया। इस शोध पत्र के लेखन में अल्मोड़ा डायट के मेंटर श्री गोपाल गैड़ा व अजीम प्रेमजी फाउंडेशन अल्मोड़ा की रिसोर्स पर्सन श्रीमती सोनालिका जी ने मार्गदर्शन किया। ब्लेंडेड रोलप्ले भास्कर जोशी का अपना स्वयं का नवाचार है। उपस्थितजनों ने इस शोध पत्र को सराहा। यह शोध पत्र सहयोगी शिक्षकों एवं आने वाले प्रशिक्षु शिक्षकों के लिए जल्द ही आईएसबीएन नंबर के साथ प्रकाशित होगा ।

डुगडुगी पत्रिका डिजीटल वितरण के लिए पीडीएफ स्वरूप में है। यह बच्चों और शिक्षकों के रचनात्मकता और अभिनव प्रयोगों को साझा करने के लिए तैयार की जा रही है। यह पूर्ण रूप से निशुल्क है। भाष्कर जोशी- संपादक कुमाऊं मंडल एवं प्रबोध उनियाल- संपादक गढ़वाल मंडल
किसी अन्य जानकारी के लिए संपर्क करें- 7017902656, 9058866961, 9760097344, 8899477295,
मेल-takdhinaadhin@gmail.com, prabodhuniyal@gmail.com, bhaskarjoshi2024@gmail.com
ऑनलाइन प्रकाशन का पता- राजेश पांडेय (तक धिनाधिन) प्रेमनगर बाजार, डोईवाला, जिला- देहरादून (उत्तराखंड) पिन-248140